(१७) मुनिवर आज मेरी...

मुनिवर आज मेरी कुटिया में आये हैं;
चलते-फिरते.... चलते-फिरते सिद्ध प्रभु आये हैं ॥ टेक ॥

हाथ कमण्डल बगल में पीछी है, मुनिवर पे सारी दुनिया रीझी है;
नगन दिगम्बर हो... नगर दिगम्बर मुनिवर आये हैं ॥ 1 ॥

अत्र अत्र तिष्ठो हे मुनिवर! भूमि शुद्धि हमने कराई है;
आहार कराके... आहार कराके नर नारी हर्षाये हैं ॥ 2 ॥

प्रासुक जल से चरण पखारे हैं, गन्धोदक पा भाग्य संवारे हैं;
शुद्ध भोजन के... शुद्ध भोजन के ग्रास बनाये हैं ॥ 3 ॥

नगन दिगम्बर मुद्राधारी है, वीतरागी मुद्रा अति प्यारी है;
धन्य हुए ये... धन्य हुए ये नयन हमारे हैं ॥ 4 ॥

नगन दिगम्बर साधु बड़े प्यारे हैं, जैन धरम के ये ही सहारे हैं;
ज्ञान के सागर... ज्ञान के सागर ज्ञान बरसाये हैं ॥ 5 ॥